The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 | June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

मतान्तरम्' खण्डकाव्य में पौराणिक पुनर्पाठ एवं वैचारिक चेतना

डॉ. मनोज कुमार

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, एम० एम० महिला महाविद्यालय, आरा, बिहार

कुमारी नीतू

शोधार्थी, संस्कृत विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 19/06/2025
स्वीकृति तिथि: 26/06/2025
प्रकाशनतिथि: 30/06/2025

मुख्य शब्द : मतान्तरम्, रेवाप्रसाद द्विवेदी, खण्डकाव्य, रामायण, महाभारत, पौराणिक पुनर्पाठ, वैचारिक चेतना, आधुनिक संस्कृत साहित्य।

सारांश

संस्कृत साहित्य की दीर्घकालीन परम्परा में रामायण एवं महाभारत के कथानक भारतीय सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना को निरन्तर प्रभावित करते रहे हैं। परिवर्तित युगीन परिस्थितियों में इन कथानकों का पुनर्पाठ साहित्य को नवीन अर्थवत्ता प्रदान करता है। आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख रचनाकार सनातनकवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी का 'मतान्तरम्' खण्डकाव्य इसी दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने रामायण एवं महाभारत के सुविख्यात पात्रों और प्रसंगों को ग्रहण कर उनके परम्परागत रूप से स्वीकृत पक्षों के समानान्तर अन्य सम्भावित पक्षों को उद्घाटित किया है। यहाँ 'मतान्तर' का आशय केवल विरोधी मत से नहीं, अपितु स्थापित मान्यताओं का पुनर्विचार, पुनर्मूल्यांकन एवं विवेकपूर्ण परीक्षण है। राम, भरत, कैकेयी, सुग्रीव, बाली, रूमा, रावण, श्रीकृष्ण, भीष्म और द्रोण जैसे पात्रों के माध्यम से कवि धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, सत्ता, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं व्यक्तिगत उत्तरदायित्व जैसे प्रश्नों पर नवीन चिन्तन की प्रेरणा देता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में 'मतान्तरम्' की कथावस्तु, पौराणिक पुनर्पाठ, पात्रों की वैचारिक पुनर्स्थापना, व्यङ्ग्यात्मक अभिव्यक्ति तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता का अनुशीलन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आचार्य द्विवेदी परम्परा का निषेध नहीं करते, बल्कि उसके भीतर संवाद और विचार की नवीन सम्भावनाओं का

अन्वेषण करते हैं। फलतः 'मतान्तरम्' आधुनिक संस्कृत खण्डकाव्य में स्वतंत्र चिन्तन एवं आलोचनात्मक सामाजिक चेतना का समर्थ उदाहरण सिद्ध होता है।

1.परिचय

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति और चिन्तन-परम्परा का ऐसा अक्षय स्रोत है जिसमें मानव-जीवन के लौकिक एवं पारलौकिक दोनों पक्षों का सम्यक् निरूपण प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य से आरम्भ होकर रामायण, महाभारत, पुराण, दर्शन, महाकाव्य, नाटक एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य तक इसकी धारा निरन्तर प्रवाहमान रही है। संस्कृत साहित्य की इस अविच्छिन्न परम्परा का महत्त्व केवल उसकी प्राचीनता में नहीं, अपितु प्रत्येक परिवर्तित युग के अनुरूप नवीन अर्थ ग्रहण करने की उसकी क्षमता में भी निहित है। इसीलिए आधुनिक संस्कृत साहित्य ने अतीत से सम्बन्ध बनाए रखते हुए वर्तमान जीवन की अनुभूतियों, समस्याओं और वैचारिक प्रश्नों को भी अपने भीतर स्थान प्रदान किया है। [4][5]

भारतीय साहित्य में रामायण और महाभारत केवल दो प्राचीन महाकाव्य नहीं हैं, बल्कि भारतीय सामाजिक स्मृति एवं सांस्कृतिक चेतना के आधारभूत ग्रन्थ हैं। रामायण के राम, भरत, कैकेयी, सीता, सुग्रीव, बाली और रावण तथा महाभारत के श्रीकृष्ण, अर्जुन, भीष्म, द्रोण आदि पात्र भारतीय मानस में अत्यन्त गहराई से प्रतिष्ठित हैं। कालान्तर में इन पात्रों से सम्बद्ध कुछ विशिष्ट धारणाएँ भी सामाजिक चेतना में स्थिर होती गईं। साहित्य का सृजनात्मक स्वभाव किन्तु किसी स्थापित धारणा को केवल पुनरावृत्त नहीं करता; वह समय-समय पर उन धारणाओं के भीतर निहित अन्य अर्थों एवं सम्भावनाओं की खोज भी करता है। [2][3]

आधुनिक संस्कृत साहित्य में सनातनकवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ऐसे ही रचनाकार हैं जिन्होंने भारतीय परम्परा को अत्यन्त निकट से ग्रहण करने के साथ उसे नवीन वैचारिक दृष्टि भी प्रदान की है। उनके काव्य में एक ओर शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का गहन अनुशीलन दिखाई देता है, वहीं दूसरी ओर वर्तमान समाज एवं मानव-जीवन के प्रति तीव्र संवेदनशीलता भी उपस्थित है। उन्होंने साहित्य को मात्र प्राचीन आदर्शों की पुनरुक्ति का माध्यम न बनाकर नवीन चिन्तन एवं युगीन विमर्श का साधन बनाया। आधुनिक संस्कृत काव्य-परम्परा में उनका यह वैशिष्ट्य उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। [4][9]

आचार्य द्विवेदी का *मतान्तरम्* खण्डकाव्य इस सृजनात्मक प्रवृत्ति का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। 'मतान्तर' शब्द अपने आप में इस काव्य की सम्पूर्ण वैचारिक संरचना की ओर संकेत करता है। सामान्यतः 'मतान्तर' का अर्थ किसी प्रचलित मत से भिन्न मत माना जाता है, परन्तु प्रस्तुत काव्य में इसका अर्थ केवल विरोध अथवा निषेध तक सीमित नहीं है। यहाँ यह किसी स्थापित कथ्य को उसके दूसरे सम्भावित पक्ष से देखने, उस पर प्रश्न करने तथा विवेकपूर्ण पुनर्विचार करने की प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। [1]

पौराणिक अथवा महाकाव्यात्मक कथानकों का पुनर्पाठ आधुनिक साहित्य की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। पुनर्पाठ का उद्देश्य मूल ग्रन्थ का खण्डन नहीं होता, बल्कि उसमें निहित उन प्रश्नों को पुनः सक्रिय करना होता है जो कालान्तर में किसी एक स्थापित व्याख्या के कारण गौण हो गए हों। रामायण और महाभारत की विशाल कथाभूमि ऐसी पुनर्व्याख्या के लिए अत्यन्त समृद्ध है। इन दोनों ग्रन्थों में धर्म, कर्तव्य, सत्ता, परिवार, नारी, युद्ध, न्याय, प्रतिज्ञा, व्यक्तिगत आकांक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व से सम्बन्धित अनेक जटिल प्रश्न उपस्थित हैं। [2][3] *मतान्तरम्* इन्हीं प्रश्नों को आधुनिक संवेदना के प्रकाश में पुनः देखने का अवसर प्रदान करता है। [1]

रामायण में राम आदर्श पुरुष और धर्मनिष्ठ शासक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। भारतीय समाज में उनका चरित्र मर्यादा, कर्तव्य और नैतिकता का प्रतीक बन गया है। किन्तु किसी भी महाकाव्यात्मक चरित्र को समझने के लिए उसके समक्ष उपस्थित परिस्थितियों, निर्णयों एवं उन निर्णयों से प्रभावित होने वाले अन्य पात्रों पर भी विचार करना आवश्यक है। [2] *मतान्तरम्* की दृष्टि इसी वैचारिक व्यापकता की ओर उन्मुख दिखाई देती है। कवि चरित्र की प्रतिष्ठा का निषेध न करके उसके चारों ओर उपस्थित अन्य जीवन-सत्यों को भी विचारणीय बनाता है। [1]

भरत का चरित्र रामायण में त्याग, भ्रातृप्रेम एवं निःस्वार्थ भाव का अद्वितीय उदाहरण है। राजसत्ता प्राप्त होने की परिस्थितियाँ अनुकूल होने के बाद भी भरत उसका त्याग कर राम के प्रति निष्ठा व्यक्त करते हैं। [2] ऐसे प्रसंग आधुनिक पाठक के सम्मुख सत्ता और अधिकार के सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत करते हैं—क्या किसी पद की उपलब्धता ही उस पर नैतिक अधिकार की पर्याप्त शर्त है? भरत के चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय परम्परा में सत्ता की वैधता को केवल अवसर से नहीं, बल्कि धर्म एवं नैतिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ा गया है। आधुनिक समाज में सत्ता-लिप्सा एवं व्यक्तिगत स्वार्थ के सन्दर्भ में इस चरित्र की पुनर्स्मृति विशेष अर्थ ग्रहण करती है।

मतान्तरम् की नवीनता विशेष रूप से उन पात्रों के पुनर्विचार में सामने आती है जिनके सम्बन्ध में परम्परा में कोई निश्चित नकारात्मक अथवा विवादास्पद धारणा निर्मित हो चुकी है। कैकेयी इसका एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। रामायण के लोकप्रिय सामाजिक पाठ में कैकेयी सामान्यतः राम के वनवास का कारण मानी जाती हैं। फलतः उनका व्यक्तित्व अनेक बार केवल इसी एक घटना तक सीमित कर दिया जाता है। [2] परन्तु किसी चरित्र को समझने के लिए उसके मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक और सामाजिक सन्दर्भों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। *मतान्तरम्* का मूल वैचारिक आग्रह यही है कि स्थापित निष्कर्ष के अतिरिक्त किसी घटना के दूसरे पक्ष पर विचार करने का अवसर भी बना रहना चाहिए। [1]

यहाँ कवि का प्रयोजन कैकेयी को अनिवार्यतः निर्दोष सिद्ध करना नहीं है, बल्कि नैतिक निर्णय की प्रक्रिया को अधिक व्यापक बनाना है। किसी चरित्र को पूर्णतः शुभ अथवा पूर्णतः अशुभ घोषित करना साहित्य की जटिल मानवीय चेतना को संकुचित कर सकता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक दृष्टि मनुष्य को उसके अन्तर्विरोधों सहित समझने का आग्रह करती है। इस दृष्टि से *मतान्तरम्* में पौराणिक पात्र आधुनिक संवेदनशीलता से सम्पन्न हो उठते हैं। वे केवल प्रतीक नहीं रहते, बल्कि विचार के विषय बन जाते हैं। [1][4]

सुग्रीव और बाली का प्रसंग भी इसी प्रकार अनेक नैतिक प्रश्नों से जुड़ा हुआ है। रामायण की मूल कथा में भ्रातृसंघर्ष, राज्याधिकार, पत्नी के अधिकार तथा राम द्वारा बाली-वध जैसे प्रसंगों के कारण न्याय और नीति के जटिल प्रश्न उपस्थित होते हैं। [2] परम्परागत कथा में राम के कृत्य का धार्मिक एवं राजनीतिक औचित्य प्रस्तुत किया गया है, किन्तु आधुनिक पाठक उस घटना को बाली अथवा रूमा जैसे पात्रों की दृष्टि से भी देखने का प्रयास कर सकता है। *मतान्तरम्* का महत्त्व इसी बहुदृष्टिकता को सम्भव बनाने में है। [1]

रूमा जैसे पात्र का उल्लेख विशेष रूप से यह स्पष्ट करता है कि साहित्य में मुख्य कथा के समानान्तर उपस्थित अपेक्षाकृत अल्पचर्चित पात्र भी वैचारिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। इतिहास एवं महाकाव्य प्रायः प्रमुख नायकों के दृष्टिकोण से स्मरण किए जाते हैं, जबकि उनसे प्रभावित अन्य पात्रों की अनुभूतियाँ सामाजिक स्मृति में कम स्थान प्राप्त करती हैं। पुनर्पाठ की प्रक्रिया इन्हीं मौन अथवा गौण पक्षों को पुनः श्रव्य बनाती है। इस प्रकार *मतान्तरम्* का वैचारिक महत्व केवल प्रसिद्ध कथाओं की नवीन व्याख्या में नहीं, अपितु कथानक के केन्द्र और परिधि के सम्बन्ध को पुनः निर्धारित करने में भी निहित है। [1]

रावण का चरित्र भारतीय महाकाव्य-परम्परा में अधर्म और अहंकार का प्रतिनिधि माना जाता है। उसके कर्मों का नैतिक मूल्यांकन रामायण के कथानक में स्पष्ट रूप से उपस्थित है। [2] फिर भी रावण विद्वत्ता, शक्ति, तप और शासन-सामर्थ्य से भी सम्पन्न पात्र है। यह द्वन्द्व स्वयं उसके चरित्र को साहित्यिक दृष्टि से जटिल बनाता है। किसी पात्र के दोषों को स्वीकार करते हुए उसकी अन्य विशेषताओं को देखना उसके कर्मों का समर्थन नहीं, बल्कि साहित्यिक चरित्र की पूर्णता को पहचानना है। यही विवेकपूर्ण भेद आलोचनात्मक साहित्यिक अध्ययन की आवश्यकता है। [1][6]

महाभारत का क्षेत्र तो नैतिक जटिलताओं की दृष्टि से और भी व्यापक है। यह ऐसा महाकाव्य है जिसमें धर्म और अधर्म के प्रश्न कई बार स्पष्ट विभाजन के स्थान पर परिस्थितिजन्य रूप में उपस्थित होते हैं। श्रीकृष्ण, भीष्म, द्रोण, अर्जुन, भीम, धृतराष्ट्र तथा अन्य पात्रों के निर्णयों को उनकी परिस्थितियों से पृथक् करके समझना कठिन है। [3] *मतान्तरम्* इसी महाभारतीय जटिलता को आधुनिक खण्डकाव्य में वैचारिक ऊर्जा प्रदान करता है। [1]

भीष्म भारतीय साहित्य में सत्यनिष्ठा, प्रतिज्ञा और त्याग के प्रतीक हैं। उनकी भीषण प्रतिज्ञा ने उन्हें 'भीष्म' बनाया। किन्तु वही प्रतिज्ञाबद्धता आगे चलकर अनेक ऐसी परिस्थितियों में उन्हें निष्क्रिय अथवा विवश बनाती है जहाँ नैतिक हस्तक्षेप आवश्यक प्रतीत होता है। [3] यहाँ एक अत्यन्त गम्भीर प्रश्न उत्पन्न होता है—क्या प्रतिज्ञा अपने आप में धर्म है अथवा उसकी नैतिकता परिणाम और परिस्थिति के आधार पर भी विचारणीय है? आधुनिक नैतिक चिन्तन के लिए यह प्रश्न आज भी महत्त्वपूर्ण है। किसी आदर्श का यान्त्रिक पालन यदि व्यापक न्याय को बाधित करे तो मनुष्य का कर्तव्य क्या होना चाहिए? *मतान्तरम्* की वैचारिक चेतना ऐसे ही प्रश्नों के लिए स्थान निर्मित करती है। [1]

द्रोणाचार्य का चरित्र भी शिक्षा, गुरुता, राज्याश्रय एवं व्यक्तिगत पक्षधरता से सम्बन्धित अनेक प्रश्न सामने रखता है। महाभारत में उनका व्यक्तित्व महान् आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित है, परन्तु एकलव्य का प्रसंग, द्रुपद के प्रति उनका व्यवहार और कुरुक्षेत्र के युद्ध में उनकी भूमिका उनके चरित्र को बहुआयामी बनाती है। [3] आधुनिक समाज में शिक्षा की समानता, अवसर, शिक्षक की निष्पक्षता और सामाजिक भेदभाव पर चल रहे विमर्शों के सन्दर्भ में ऐसे पात्रों का पुनर्पाठ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यहाँ पौराणिक कथा वर्तमान सामाजिक प्रश्न से संवाद स्थापित करती है।

श्रीकृष्ण का चरित्र महाभारत में धर्म की रक्षा, राजनैतिक प्रज्ञा और कर्मयोग का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी भूमिका को समझने के लिए केवल युद्ध की घटनाओं पर नहीं, बल्कि उस व्यापक धर्मसंकट पर भी विचार करना आवश्यक है जिसमें वे पाण्डवों का मार्गदर्शन करते हैं। [3] महाभारत का धर्म अनेक बार स्थूल नियम के स्थान पर लोकमंगल और परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार से सम्बद्ध दिखाई देता है। इस कारण महाभारतीय धर्म का अध्ययन स्वयं 'मतान्तर' की सम्भावना उत्पन्न करता है—एक ही घटना को विभिन्न पात्र अलग-अलग दृष्टि से देख सकते हैं।

आचार्य द्विवेदी का साहित्यिक महत्त्व इसी बिन्दु पर स्पष्ट होता है। वे आधुनिकता को परम्परा के निषेध के रूप में ग्रहण नहीं करते। उनकी आधुनिकता परम्परा से संवाद करने वाली आधुनिकता है। वे यह नहीं कहते कि पूर्ववर्ती व्याख्याएँ सर्वथा अनुचित हैं; वे केवल इतना आग्रह करते हैं कि किसी एक व्याख्या को विचार का अन्तिम बिन्दु न बना दिया जाए। [1] यह दृष्टिकोण भारतीय शास्त्रीय परम्परा की उस मूल प्रवृत्ति से भी सम्बद्ध है जिसमें विभिन्न मतों, सिद्धान्तों और व्याख्याओं के माध्यम से विषय का परीक्षण किया जाता रहा है।

भारतीय काव्यशास्त्र में भी सहृदय की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी गई है। काव्य केवल कवि की रचना नहीं रहता; वह सहृदय की अनुभूति में पुनः सृजित होता है। *साहित्यदर्पण* तथा *काव्यप्रकाश* जैसे ग्रन्थ काव्य के भाव, रस, व्यञ्जना और सहृदयता पर विस्तृत विचार करते हैं। [6][7] इस दृष्टि से देखा जाए तो किसी पुराकथा का नवीन पाठ भी सहृदय की सक्रिय सहभागिता का परिणाम है। प्रत्येक युग का सहृदय अपनी सामाजिक परिस्थितियों एवं वैचारिक अनुभवों के आलोक में प्राचीन काव्य से नवीन अर्थ ग्रहण कर सकता है।

आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी स्वयं काव्यशास्त्रीय परम्परा के गम्भीर अध्येता और आचार्य थे। उनकी *काव्यालंकारकारिका* जैसी कृतियाँ उनके शास्त्रीय चिन्तन का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। [9] इसलिए *मतान्तरम्* की वैचारिक नवीनता को शास्त्रीय परम्परा के अज्ञान से उत्पन्न विद्रोह नहीं माना जा सकता। इसके विपरीत यह उस कवि का पुनर्विचार है जो मूल परम्परा के मर्म से परिचित होते हुए भी सृजनात्मक स्वतन्त्रता का प्रयोग करता है। यही कारण है कि उनका पुनर्पाठ परम्परा और नवीनता के मध्य सेतु के रूप में सामने आता है।

इस खण्डकाव्य में व्यङ्ग्य की भूमिका भी उल्लेखनीय है। स्थापित सामाजिक धारणाओं के भीतर उपस्थित अन्तर्विरोधों को प्रत्यक्ष उपदेश की अपेक्षा व्यङ्ग्य के माध्यम से अधिक प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया जा सकता है। व्यङ्ग्य पाठक को केवल किसी दोष पर हँसाता नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपे सामाजिक अथवा नैतिक विसंगति-बोध को भी जागृत करता है। *मतान्तरम्* में कवि अनेक प्रसंगों के माध्यम से ऐसी ही वैचारिक असुविधा उत्पन्न करता है जिससे सहृदय स्वयं प्रश्न करने लगे। [1]

यही प्रश्नाकुलता काव्य को वर्तमान समाज से जोड़ती है। आधुनिक समाज में सूचना के तीव्र प्रवाह के कारण अनेक मत, धारणाएँ तथा कथ्य मनुष्य के सामने उपस्थित होते हैं। सामाजिक माध्यम, राजनीति, धर्म, इतिहास एवं सार्वजनिक विमर्श में किसी घटना के विषय में एकांगी दृष्टिकोण शीघ्रता से स्थापित हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में बिना परीक्षण किसी कथ्य को स्वीकार करना विवेकसम्मत नहीं माना जा सकता। *मतान्तरम्* की मूल चेतना इस आधुनिक आवश्यकता से अद्भुत साम्य रखती है—प्रत्येक स्थापित मत के प्रति शत्रुता नहीं, किन्तु उसके विवेकपूर्ण परीक्षण का अधिकार अवश्य। [1]

इस दृष्टि से 'मतान्तर' लोकतान्त्रिक एवं संवादपरक सामाजिक चेतना का भी प्रतीक बन जाता है। जहाँ भिन्न मत के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जाता, वहाँ विचार का विकास अवरुद्ध हो जाता है। मतभेद और वैचारिक विरोध को यदि शत्रुता के रूप में न देखकर सत्य की खोज के साधन के रूप में स्वीकार किया जाए तो समाज अधिक विवेकशील बन सकता है। भारतीय दार्शनिक परम्परा में भी पूर्वपक्ष एवं उत्तरपक्ष के माध्यम से मतों के परीक्षण की समृद्ध परम्परा रही है। आचार्य द्विवेदी की काव्यदृष्टि इस व्यापक भारतीय संवादपरम्परा से जुड़ी प्रतीत होती है।

मतान्तरम् की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें पौराणिक कथा और आधुनिक सामाजिक चेतना के मध्य कृत्रिम दूरी नहीं रखी गई। रामायण और महाभारत का आधुनिक उपयोग तभी सार्थक है जब वे केवल पूजनीय ग्रन्थ बनकर न रह जाएँ, बल्कि मानव-जीवन के जटिल प्रश्नों पर वर्तमान समाज को भी विचार करने की प्रेरणा दें। [2][3] प्राचीन कथा का सतत् पुनर्पाठ उसकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता को जीवित रखता है। यह पुनर्पाठ मूल कथा की गरिमा को कम नहीं करता, बल्कि उसके अर्थक्षेत्र का विस्तार करता है।

आधुनिक संस्कृत काव्य-परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण गुण यही है कि वह संस्कृत को केवल अतीत की भाषा मानने वाली धारणा का प्रतिवाद करती है। आधुनिक संस्कृत कवियों ने सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और वैश्विक विषयों पर लेखन करके संस्कृत की समकालीन अभिव्यक्ति-क्षमता को प्रमाणित किया है। [4] *मतान्तरम्* में यह आधुनिकता कथ्य के स्तर पर ही नहीं, दृष्टि के स्तर पर भी उपस्थित है। यहाँ प्राचीन कथा आधुनिक आलोचनात्मक चेतना के साथ पुनः संयोजित होती है।

इस प्रक्रिया में कवि पात्रों को ऐतिहासिक न्यायालय में खड़ा करके दण्ड देने अथवा निर्दोष घोषित करने का प्रयास नहीं करता। साहित्यिक पुनर्पाठ न्यायिक निर्णय से भिन्न है। इसका उद्देश्य प्रश्नों की जटिलता को उजागर करना, दबे हुए पक्षों को सुनना तथा सहृदय की नैतिक संवेदना को विस्तृत करना है। यदि किसी परम्परागत नायक के निर्णय पर प्रश्न किया जाता है तो इससे उसकी सम्पूर्ण महत्ता नष्ट नहीं होती; उसी प्रकार किसी परम्परागत प्रतिनायक के किसी सकारात्मक पक्ष की चर्चा उसके अनुचित कर्मों को उचित नहीं ठहराती। *मतान्तरम्* की सम्यक् समझ के लिए यह भेद अत्यन्त आवश्यक है। [1]

वर्तमान सामाजिक विमर्श में भी अनेक बार किसी व्यक्ति अथवा ऐतिहासिक पात्र को पूर्णतः आदर्श अथवा पूर्णतः दुष्ट के रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति देखी जाती है। ऐसी द्विध्रुवीय दृष्टि मानवीय जटिलता को समझने में बाधक होती है। साहित्य मनुष्य को उसके गुण-दोष, विवशता, महत्त्वाकांक्षा, परिस्थिति और निर्णयों के समुच्चय के रूप में देखता है। इसीलिए साहित्यिक चरित्र अनेक बार नैतिक शिक्षा की अपेक्षा अधिक गहरी मानवीय समझ प्रदान करते हैं। *मतान्तरम्* इसी साहित्यिक गहराई की दिशा में सहृदय को प्रेरित करता है।

यह काव्य नारी-पात्रों के पुनर्विचार की सम्भावना भी प्रस्तुत करता है। कैकेयी, रूमा, शूर्पणखा, अहल्या आदि पात्रों की कथा भारतीय सामाजिक स्मृति में विभिन्न रूपों में उपस्थित रही है। [2] यदि कथा को केवल नायक-केन्द्रित दृष्टि से पढ़ा जाए तो इन पात्रों की अपनी पीड़ा, इच्छा, सामाजिक स्थिति अथवा दृष्टिकोण कम दिखाई पड़ सकते हैं। आधुनिक पुनर्पाठ इन पात्रों को उनकी स्वतन्त्र मानवीय स्थिति में देखने का अवसर देता है। इस प्रकार *मतान्तरम्* की वैचारिक संरचना आधुनिक नारी-विमर्श के लिए भी कुछ सम्भावित प्रश्न निर्मित करती है, भले ही काव्य का मूल उद्देश्य किसी विशेष आधुनिक सिद्धान्त की स्थापना न हो।

आचार्य राजशेखर ने *काव्यमीमांसा* में कवि एवं काव्य-सृजन से सम्बद्ध अनेक पक्षों का निरूपण करते हुए कवि-प्रतिभा की व्यापकता को महत्त्व प्रदान किया है। [8] सच्चा कवि पूर्ववर्ती परम्परा से सामग्री ग्रहण करते हुए भी अपनी प्रतिभा के माध्यम से उसे नवीन रूप देता है। इस सन्दर्भ में *मतान्तरम्* पौराणिक कथानक के नवीन विन्यास की दृष्टि से उल्लेखनीय है। कथा परिचित है, पात्र परिचित हैं, किन्तु प्रश्न नवीन हैं। इसी नवीन प्रश्नवत्ता में इस खण्डकाव्य की मौलिकता निहित है।

काव्य की सार्थकता केवल इस बात में नहीं होती कि वह सहृदय को सहमत कर ले। अनेक बार श्रेष्ठ साहित्य पाठक को असहमति की स्थिति में भी सोचने के लिए विवश करता है। *मतान्तरम्* का मूल्यांकन करते समय भी आवश्यक नहीं कि पाठक कवि के प्रत्येक संकेत अथवा वैकल्पिक दृष्टिकोण से पूर्णतः सहमत हो। काव्य का वास्तविक योगदान यह है कि वह स्थापित कथानक को पुनः विचार के केन्द्र में लाता है। प्रश्न पूछने की यह क्षमता ही उसके आधुनिक स्वरूप की पहचान है।

इसीलिए *मतान्तरम्* को परम्परा-विरोधी काव्य कहना उसकी वैचारिक संरचना को सीमित करना होगा। वस्तुतः यह परम्परा के भीतर से परम्परा का पुनर्पाठ है। कवि रामायण और महाभारत के सांस्कृतिक महत्त्व को स्वीकार करते हुए ही उनके पात्रों के अन्य पक्षों को सामने लाता है। [1][2][3] परम्परा के साथ ऐसा आत्मीय संवाद ही उसे वर्तमान में जीवन्त बनाए रख सकता है।

यह काव्य सामाजिक दृष्टि से व्यक्ति को विवेक, सहिष्णुता एवं वैचारिक उदारता की प्रेरणा प्रदान करता है। समाज में भिन्न मत का अस्तित्व स्वाभाविक है। यदि प्रत्येक मत को शत्रुता की दृष्टि से देखा जाएगा तो संवाद का स्थान संघर्ष ले लेगा। 'मतान्तर' का सकारात्मक अर्थ यह है कि सत्य तक पहुँचने के लिए अन्य दृष्टियों को सुनने का साहस होना चाहिए। इस प्रकार आचार्य द्विवेदी का यह खण्डकाव्य साहित्यिक स्तर पर जिस बहुदृष्टिकता को विकसित करता है, वह सामाजिक जीवन में भी संवादात्मकता का आधार बन सकती है।

मतान्तरम् का महत्त्व आधुनिक संस्कृत साहित्य के विकास की दृष्टि से भी स्वीकार किया जाना चाहिए। संस्कृत साहित्य के विषय में यह धारणा कभी-कभी व्यक्त की जाती है कि उसकी

आधुनिक रचनात्मकता प्राचीन कथानकों की पुनरावृत्ति तक सीमित है। यह काव्य ऐसी धारणा को असत्य सिद्ध करता है। प्राचीन कथानक को ग्रहण करना पुनरावृत्ति तभी होगा जब उसके साथ कोई नवीन दृष्टि न जुड़ी हो। *मतान्तरम्* में कथा प्राचीन अवश्य है, किन्तु उसकी वैचारिक दिशा नवीन है। [1][4]

कवि का यह प्रयास भारतीय सांस्कृतिक परम्परा की निरन्तरता का भी परिचायक है। संस्कृति का संरक्षण उसके स्थिरीकरण में नहीं, बल्कि नये युग के साथ उसके सार्थक संवाद में निहित होता है। यदि रामायण और महाभारत प्रत्येक युग में पुनः पढ़े और समझे जाते हैं तो यही उनकी जीवित सांस्कृतिक शक्ति का प्रमाण है। [2][3] आचार्य द्विवेदी ने इस पुनर्पाठ की प्रक्रिया को संस्कृत खण्डकाव्य का विषय बनाकर प्राचीन और आधुनिक के मध्य सृजनात्मक सेतु स्थापित किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सनातनकवि महामहोपाध्याय आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी विरचित *मतान्तरम्* आधुनिक संस्कृत खण्डकाव्य-परम्परा की एक विशिष्ट वैचारिक उपलब्धि है। इसमें रामायण एवं महाभारत के प्रसिद्ध कथानकों और पात्रों को आधार बनाते हुए कवि ने परम्परागत मान्यताओं के समानान्तर अन्य सम्भावित पक्षों के प्रति सहृदय का ध्यान आकृष्ट किया है। [1] कवि का उद्देश्य मूल महाकाव्यों अथवा उनके सांस्कृतिक आदर्शों का निषेध करना नहीं, बल्कि उन पर विवेकपूर्ण पुनर्विचार की सम्भावना बनाए रखना है।

राम, भरत, कैकेयी, सुग्रीव, बाली, रूमा, रावण, श्रीकृष्ण, भीष्म, द्रोण आदि पात्रों से सम्बन्धित प्रसंगों के माध्यम से धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय, सत्ता, कर्तव्य, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे प्रश्न नवीन रूप में सामने आते हैं। [2][3] इन प्रश्नों के कारण परिचित पौराणिक कथा आधुनिक समाज के लिए पुनः अर्थवान् बन जाती है।

मतान्तरम् की प्रमुख उपलब्धि उसकी बहुदृष्टिक वैचारिक चेतना है। वह किसी एक मत को निरस्त कर दूसरे मत को अन्तिम सत्य के रूप में स्थापित करने की अपेक्षा सहृदय को विचार, विमर्श एवं पुनर्मूल्यांकन की दिशा में प्रेरित करता है।

यही कारण है कि यह काव्य केवल पौराणिक आख्यान का पुनर्कथन न होकर आधुनिक आलोचनात्मक चेतना का साहित्यिक दस्तावेज बन जाता है। परम्परा और आधुनिकता के मध्य ऐसा संवाद आधुनिक संस्कृत साहित्य की जीवन्तता का प्रमाण है। अतः *मतान्तरम्* को भारतीय पौराणिक परम्परा के सृजनात्मक पुनर्पाठ, स्वतंत्र चिन्तन तथा सामाजिक वैचारिक चेतना के एक महत्त्वपूर्ण खण्डकाव्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

सन्दर्भ

[1] द्विवेदी, सनातनकवि आचार्य श्री रेवाप्रसाद, *मतान्तरम्*, कालिदास संस्थानम्, वाराणसी, 2001।

[2] वाल्मीकि, *रामायण*, गीता प्रेस, गोरखपुर।

[3] वेदव्यास, *महाभारत*, गीता प्रेस, गोरखपुर।

[4] मुसलगाँवकर, केशव, *आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा*।

[5] त्रिपाठी, राधावल्लभ, *संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास*।

[6] विश्वनाथ, आचार्य, *साहित्यदर्पण*, व्याख्याकार—आचार्य शोभराज शर्मा 'रेग्मी', चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

[7] मम्मट, आचार्य, *काव्यप्रकाश*, व्याख्याकार—आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि।

[8] राजशेखर, आचार्य, *काव्यमीमांसा*, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013।

[9] द्विवेदी, सनातनकवि आचार्य श्री रेवाप्रसाद, *काव्यालंकारकारिका (अभिनवकाव्यशास्त्रम्)*, कालिदास संस्थानम्, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 2014।